संपादकीय जागरण

शनिवार, 18 नवंबर, 2017 : मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या वि. 2074

जैसा आपका लक्ष्य होगा, वैसा ही आपका जीवन होगा

सुधारों को समर्थन

अर्थव्यवस्था को गति देने के तौर-तरीके खोजने में लगी मोदी सरकार के लिए इससे बेहतर खबर और कोई नहीं हो सकती कि रेटिंग एजेंसी मूडीज ने 13 साल बाद भारत की रेटिंग में सुधार करने का फैसला किया। यह एक संयोग ही है कि इसके पहले ऐसा फैसला 2004 में तब हुआ था जब केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली ही सरकार थी। मूडीज का यह फैसला विश्व समुदाय को भारत की ओर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करेगा। इसके पहले कुछ ऐसा ही काम विश्व बैंक की उस रैंकिंग ने भी किया था जो विभिन्न देशों में कारोबारी सुगमता के माहौल को बयान कर रही थी। भले ही यह एक अन्य संयोग मात्र हो, लेकिन उल्लेखनीय तो है ही कि मूडीज के निष्कर्ष ने मोदी सरकार की नीतियों पर ठीक उस समय मुहर लगाई जब एक अमेरिकी संस्था के सर्वेक्षण से यह सामने आया कि तमाम चुनौतियों के बाद भी भारतीय प्रधानमंत्री की लोकप्रियता न केवल कायम है, बल्कि उसमें वृद्धि भी हो रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था को पहले से सक्षम और भरोसेमंद बताने वाली रेटिंग मोदी सरकार के साथ-साथ उद्योग-व्यापार जगत के लिए भी एक खुशखबरी है। यह न केवल इस क्षेत्र के लोगों की उत्साह भरी प्रतिक्रिया से पता चल रहा है, बल्कि शेयर बाजार में आई उछाल से भी।

भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में अंतरराष्ट्रीय एजेंसी मूडीज का सकारात्मक आकलन उस वक्त भी आया जब विपक्षी नेताओं के साथ असंतोष से भरे सत्तारूढ़ दल के कुछ नेता यह रुदन करने में लगे हुए थे कि मोदी सरकार की रीति-नीति अर्थव्यवस्था का बेड़ा गर्क कर रही है। इस रुदन के विपरीत मूडीज ने एक तरह से यह स्थापित किया कि पहले नोटबंदी और फिर जीएसटी के जरिये भारतीय अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करने का काम किया गया। चूंकि विपक्ष इन दोनों फैसलों को लेकर ही सरकार पर निशाना साधने में लगा हुआ था इसलिए अब उसके समक्ष यह कहकर खीझने के अलावा और कोई उपाय नहीं कि विश्व बैंक और मूडीज सरीखी एजेंसियों का आकलन कोई मायने नहीं रखता। हकीकत यह है कि ऐसी एजेंसियों की अपनी एक अहमियत है और वे अंतरराष्ट्रीय उद्योग-व्यापार जगत एवं निवेशकों के रुख-रवैये को प्रभावित भी करती हैं। अब इसके प्रति सुनिश्चित हुआ जा सकता है कि विदेशी निवेशक कहीं अधिक भरोसे के साथ भारत में निवेश करेंगे। इसी के साथ भारत सरकार के लिए भी ढांचागत क्षेत्र के लिए पैसा जुटाना आसान होगा। आने वाले समय में अन्य अंतरराष्ट्रीय रेटिंग एजेंसियां भी मूडीज की तरह नतीजे पर पहुंचें तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि बीते साढ़े तीन सालों में मोदी सरकार ने एक के बाद एक कई छोटे-बड़े सुधार किए हैं। इन सुधारों का श्रेय लेना उसका अधिकार है, लेकिन इसी के साथ उसे यह भी देखना चाहिए कि एक तो भारत की क्षमता मूडीज की ओर से दी गई रेटिंग से कहीं ऊंची रेटिंग हासिल करने की है और दूसरे, अब जमीन पर हालात बदलते हुए नजर आने चाहिए। उद्योग-व्यापार में तेजी न केवल आनी चाहिए, बल्कि वह दिखनी भी चाहिए। इससे ही सरकार की राजनीतिक चुनौतियां आसान होंगी।

ब्रांड यूपी

अब उत्तर प्रदेश निर्यात क्षेत्र में अपने कद के अनुरूप प्रदर्शन करने को तैयार हो रहा है। कार्ययोजना बन गई है, पांच साल में निर्यात दोगुना किया जाना है। 'निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो' का गठन हो चुका है। अभी देश के कुल निर्यात में प्रदेश का हिस्सा पांच प्रतिशत से भी कम है जबकि आबादी में नंबर वन है, लोकसभा में नंबर वन है और प्रधानमंत्री देने में भी नंबर वन है। तब भी वाणिज्यिक परिणाम देने में इतना पिछड़ गया। अब योगी सरकार ने कारोबार को बढ़ावा देने के लिए हर जिले को एक उत्पाद एलाट करने का संकल्प लिया है। यानी हर जिले की पहचान उसके उत्पाद से होगी। इसे कौशल विकास से जोड़ा जाएगा। निर्यातकों को हर संभव प्रोत्साहन देने के लिहाज से कई ड्राईपोर्ट और नए हवाई अड्डे बना कर एयर कार्गोपोर्ट भी बनाए जाएंगे। छह आइटी (सूचना एवं प्रौद्योगिक) पार्क, जिलों में स्थायी निर्यात केंद्र, सेल्स और एक्जीबिशन सेंटर खुलेंगे, लखनऊ के अवध शिल्पग्राम में हर जिले को स्थायी स्टाल मिलेगा और हवाई कनेक्टिविटी के लिए राजधानी लखनऊ को अन्य राज्यों की राजधानियों एवं प्रदेश के मंडल मुख्यालयों से जोड़ा जाएगा।

सरकार जो भी योजना बना रही है, उसके प्रभावी अमल के लिए दृढ़ता से काम भी करे

कई दशकों बाद उत्तर प्रदेश की किसी सरकार ने आर्थिक विकास के लिए इतनी गंभीरता से काम करना शुरू किया है। अस्सी के दशक में प्रदेश में औद्योगिक संकुल बनाए गए, यहां उद्योग लगे, रियायतें दी गईं। चिमनियों से धुआं भी निकला, टिफिन बंधी साइकिलों की घंटियां शिफ्ट में कस्बे का कोलाहल तोड़तीं और ट्रकों में उत्पाद दूसरे प्रदेशों के लिए निर्यात होते। बड़ी-बड़ी कताई मिलें लगीं, हैंडलूम को पावर लूम में बदला गया। नहरें बना कर खेतों की पैदावार बढ़ाई गई और सरकारी एजेंसियों ने क्रय केंद्र भी खोले। मगर हुआ क्या, आज मिलों के दरवाजों पर मकड़ी के जाले हैं। इस सरकार के लिए यह सबक है। सरकार जो भी योजना बना रही है, उसके प्रभावी अमल के लिए दृढ़ता से काम भी करे।

बांग्लादेश में कैसे बचेंगे हिंदू

तसलीमा नसरीन

बांग्लादेश में हिंदू सिर्फ दूसरे दर्जे के नागरिक ही नहीं, बल्कि विलुप्त होती बंगाली जाति हैं। कभी-कभी सोचती हूं कि क्या बांग्लादेश सऊदी अरब जैसा हो जाएगा?

फेसबुक पर एक रोती हुई वृद्ध महिला और आग में जलते उसके घर की फोटो देखकर लगा कि यह किसी रोहिंग्या के घर फूंकने का दृश्य है और असहाय रोहिंग्या वृद्धा संपत्ति नष्ट हो जाने की वजह से रो रही है। जब फोटो के नीचे लिखे शब्दों पर निगाह गई तो वहां लिखा था, यह बांग्लादेश के रंगपुर की घटना है। करीब दस हजार मुसलमानों ने हिंदुओं पर हमला किया और लूटपाट करने के बाद उनके घरों में आग लगा दी। बताया गया कि टीटू राय नामक एक व्यक्ति ने फेसबुक पर इस्लाम का अपमान किया था, लेकिन क्या दस हजार मुसलमानों को एकत्र करना आसान काम है? दुर्भाग्य से आजकल यह करना बहुत सरल है। सिर्फ अफवाह फैलाने की आवश्यकता होती है कि अमुक मुहल्ले या इलाके के हिंदू ने फेसबुक पर इस्लाम को लेकर गलत बातें लिखी हैं। बस फिर क्या है, उन्मादी मुसलमान हाथों में धारदार हथियार, लाठी, रॉड लेकर हिंदुओं पर टूट पड़ते हैं और उनके घरों को फूंक देते हैं। कोई भी यह जानना नहीं चाहता कि इस्लाम का अपमान कैसे किया गया और जिस पर अपमान करने का आरोप लगा है उसकी फेसबुक आइडी असली है या नकली? बांग्लादेश के हिंदू जान-बूझकर यह जोखिम उठाने का साहस नहीं करेंगे। कहीं किसी मुसलमान ने ही तो हिंदू के नाम से आइडी बनाकर इस्लाम का अपमान नहीं किया? रंगपुर गांव में जिस तरह हमला किया गया उससे पता चलता है कि मुसलमानों की भीड़ ने पहले से ही हमले की योजना बना रखी थी। ऐसा ही कुछ समय पहले नासिर नगर में भी हुआ था। वहां रसराज नामक एक हिंदू लड़के की कथित फेसबुक पोस्ट को लेकर हिंदुओं के घरों को जला दिया गया था। कुछ दिनों बाद उसकी सच्चाई सामने आई। रसराज फेसबुक के बारे में कुछ जानता ही नहीं था। उसके नाम से फेक फेसबुक आइडी किसी मुसलमान ने ही तैयार की थी। इतना ही नहीं, हिंदुओं के घर कैसे लूटें-जलाएं और उन्हें आतंकित कर किस तरह बांग्लादेश से भगाया जाए, इसके लिए एक गिरोह बनाया गया था। ठीक इसी तरह रंगपुर में भी किया गया।

टीटू राय नामक कोई व्यक्ति उक्त गांव में पिछले सात वर्षों से रहता ही नहीं। जो टीटू राय सात वर्ष पहले गांव में रहता था वह कर्ज के बोझ से परेशान होकर गांव छोड़कर दूर किसी शहर में कपड़े का धंधा कर जीवन काट रहा है। कथित फेसबुक एकाउंट पर टीटू राय ने अपना कोई स्टेटस भी नहीं दिया था। उसमें खुलना के मौलाना असदुल्लाह हमीदी का स्टेटस था। असल में मौलाना हमीदी का उद्देश्य सिलेट के एक हिंदू युवक राकेश मंडल को फंसाना था। मौलाना हमीदी के स्टेटस को एमडी टीटू नामक एक शख्स ने शेयर किया था। उस एमडी टीटू को ही रंगपुर के पगलापी इलाके का टीटू राय समझ कर उसके और साथ ही पड़ोसियों के घरों को फूंक दिया गया। नासिर नगर के रसराज के नाम पर भी इसी तरह से एक मुसलमान ने फेक फेसबुक आइडी तैयार की थी और फिर हिंदुओं के घरों में लूट के बाद आग के हवाले कर दिया गया था।

बांग्लादेश के मुसलमानों का एक वर्ग दिन-प्रतिदिन कट्टर हिंदू विरोधी होता जा रहा है। दरअसल वे गैर मुस्लिमों को भगाकर बांग्लादेश को मुस्लिम देश बनाने की कोशिश में हैं। उनमें से कई तो यह मानते हैं कि गैर मुसलमानों पर अत्याचार करने से शबाब मिलता है। आतंकवादियों का भी यही मानना है कि काफिरों को धारदार हथियार से काटकर हत्या करने पर शबाब और साथ ही जन्नत भी मिल जाती है। बांग्लादेश में इसी वर्ष मार्च में हिंदुओं को फंसाने के लिए दाऊदकांदी के कुछ मुसलमान इतने उन्मादी हो गए थे कि उन्होंने एक मदरसे में जाकर कुरान पर गंदगी छींट दी थी। अच्छा यह हुआ कि हिंदुओं के घरों को आग लगाने से पहले ही यह खुलासा हो गया कि यह हरकत हबीबुर्र रहमान और उसके साथियों ने की थी। मुझे नहीं पता कि हबीबुर्र रहमान या अन्य को किसी तरह की सजा मिली या नहीं? मैं हैरान हूं कि ऐसे गुंडों के खिलाफ धार्मिक मुसलमानों ने गुस्से का कोई इजहार क्यों नहीं किया?

जैसे बांग्लादेश में हिंदू विरोधी मुसलमानों की संख्या बढ़ रही है वैसे ही भारत में मुस्लिम विरोधी हिंदुओं की संख्या बढ़ रही है। वे भी मानते हैं कि मुसलमानों को भारत में रहने का अधिकार नहीं है। ऐसे मुस्लिम विरोधी हिंदू यह भी मानते हैं कि 1947 में जो तमाम मुस्लिम पाकिस्तान नहीं गए वे जनसंख्या बढ़ा रहे हैं, आतंकी संगठनों में जुड़ रहे हैं और अल्पसंख्यक होने की वजह से सरकारी सुविधा भी पा रहे हैं। सबसे खतरनाक यह है कि यह सुनते ही कि किसी मुसलमान ने गोमांस का सेवन किया है, उसे सरे आम पीट दिया जाता है। कभी-कभी तो उसकी हत्या भी कर दी जाती है। सभी जगह हिंसा का चेहरा और उसकी भाषा एक जैसी दिखती है। यह सब देखने के बाद मन में आता है कि ये लोग समाज में परिवर्तन चाहते ही नहीं। अंधकार और अशिक्षा ने इन लोगों को अंधा बना रखा है। इसके बावजूद यह कहना होगा कि भारत और बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों के बीच काफी अंतर है। बांग्लादेश में हिंदुओं की संख्या में कमी आई है। भारत में अल्पसंख्यकों की संख्या बढ़ी है। भारत में मुसलमानों की संख्या पूरे बांग्लादेश की जनसंख्या से अधिक है। भारत में कट्टर हिंदुओं द्वारा मुसलमान पर अत्याचार होता है तो देश उनके साथ होता है। भारतीय कानून हिंदू हो या फिर मुसलमान, सभी को समान आंखों से देखता है, परंतु बांग्लादेश में जब कट्टर मुसलमानों द्वारा हिंदुओं पर अत्याचार होता है तो सरकारी मदद और सरकारी सहानुभूति, कुछ भी नहीं मिलती। वहां हिंदुओं की संख्या इतनी कम हो चुकी है कि उन्हें वोटबैंक के रूप में नहीं देखा जाता। इस्लामपरस्त पार्टियों के लोग वोट डालने गए हिंदुओं को डरा-धमका कर रखते हैं। बांग्लादेश में हिंदू सिर्फ दूसरे दर्जे के नागरिक ही नहीं, बल्कि विलुप्त होती बंगाली जाति हैं। कभी-कभी सोचती हूं कि क्या बांग्लादेश सऊदी अरब जैसा हो जाएगा?

एक ओर बांग्लादेश के मुसलमान म्यांमार सेना के हाथों सताए गए असहाय रोहिंग्या की मदद के लिए हाथ बढ़ाते हैं और दूसरी ओर वे अपने ही देश में हिंदुओं के साथ म्यांमार सेना की तरह का बर्ताव करते हैं। आखिर म्यांमार की बर्बर सेना और बांग्लादेश के मुसलमानों में फर्क क्या रहा? मुझे तो कोई फर्क नहीं दिख रहा। जो भी कट्टरवादी हिंदू, बौद्ध, ईसाई, मुसलामान हैं वे सब एक हैं। वे समाज को पीछे धकेलना चाहते हैं। हिंसा और घृणा ऐसे लोगों का सहारा है। कट्टरवाद के खिलाफ सभी को खड़ा होना होगा। नहीं तो इतने वर्षों में तैयार किए हुए आजाद ख्याल गणतंत्र हिंसा और घृणा से हार जाएंगे। जिस किसी देश से जितनी बार बहुसंख्यकों के अत्याचार से डरकर अल्पसंख्यक भागते हैं उतनी बार उस देश का नुकसान होता है। हम बांग्लादेश को और कितनी बार नष्ट करेंगे?

(लेखिका जानी-मानी साहित्यकार एवं स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

जिबूती से जापान तक भारत की छाप

तरुण विजय

संपूर्ण हिंद-प्रशांत वास्तव में शांत भारत की हिंदू सभ्यता का गौरवशाली क्षेत्र है

मनीला में संपन्न आसियान शिखर सम्मेलन में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा हिंद-प्रशांत क्षेत्र के उल्लेख एवं जापान के प्रधानमंत्री शिंजो एबी द्वारा सामरिक चतुर्भुज की अवधारणा में भारत के साथ आगे बढ़ने के घटनाक्रम ने सागर क्षेत्र में भारत की महती भूमिका प्रकट की है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में करीब 48 देश हैं और संसार की आधी आबादी यहां रहती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसका अपार महत्व समझा और समुद्री क्षेत्र में 'सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फॉर ऑल इन द रीजन' यानी अंग्रेजी के प्रथमाक्षरों से बनी सागर योजना घोषित की। यह संपूर्ण सागर क्षेत्र-प्रशांत से हिंद महासागर तक भारत के लिए सामरिक, आर्थिक, पर्यावरणीय एवं जैविक विविधता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो भविष्य में खैबर के दर्रे और हिमालय की उपत्यकाओं से भी ज्यादा चुनौतीपूर्ण सिद्ध होगा। अफ्रीका के नन्हें से सात लाख की आबादी वाले जिबूती से लेकर जापान तक फैले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रत्येक हिस्से पर प्राचीन हिंदू सभ्यता और हिंद सागर क्षेत्रीय व्यापारियों के पद चिन्ह मिलते हैं। यह पश्चिमी एवं वामपंथी भारत-द्वेषी मानसिकता ही रही कि हिंदू प्रभाव दबाते हुए उसे भारतीय औपनिवेशिक प्रभाव बताते रहे।

मसाले, रेशम, स्वर्ण और हाथी दांत के व्यापार के लिए शताब्दियों से हिंदू व्यापारी इथियोपिया, जिबूती जैसे देशों में जाते रहे। इथियोपिया में मैंने वहां के संग्रहालय में इस्लाम और ईसाइयत से पूर्व काल के अदिस-अबाबा और गोमांतक (गोवा) के मध्य व्यापारिक विनिमय के प्रमाण देखे थे। इथियोपिया में स्वर्णभूषणों के डिजाइन भारत से आए हैं। मालदीव पहले हिंदू फिर 12वीं शती तक पूर्णतः बौद्ध द्वीप था। अरब व्यापारियों और उनके कट्टरपंथी मुल्लाओं ने वहां इस्लाम फैलाया। आज भी मालदीव संग्रहालय में बौद्ध अवशेष विद्यमान हैं। श्रीलंका में सिंहल द्वीप है जहां चप्पे-चप्पे पर राम, सीता और बुद्ध हैं। भारत के दो द्वीप-लक्षदीप एवं अंडमान-हिंदू विरासत के प्रतीक हैं। जहां लक्षदीप का नाम ही संस्कृत में है वहीं विश्वास है कि अंडमान हनुमान का अपभ्रंश है, जहां लंका जलाकर लौट रहे हनुमान ने विश्राम किया था। थाईलैंड का पूर्व मूल नाम स्याम है जहां 416 वर्ष तक राजधानी 'अजुध्या' रही। वहां हर कोने में शिव, गणपति की प्रतिमाएं हैं। वहां की वर्तमान सम्राट परंपरा 'राम' कही जाती है। जब वहां के 'राम नवम सम्राट अतुल्य तेज भूमिबल' का निधन हुआ तो हिंदू वैदिक रीति से उनका अंतिम संस्कार किया गया। वहां के राजगुरु काशी हिंदू विश्वविद्यालय के स्नातक हैं। वर्तमान थाई नरेश को राम दशम कहा जाता है।

म्यांमार का मूल नाम ब्रह्मदेश (बर्मा) है जहां रामायण और बुद्ध कथा एक साथ विद्यमान है। यह क्षेत्र स्वर्णभूमि और मीकांग नदी (मां गंगा नदी का अपभ्रंश) से आभामय है जहां का शिल्प एवं साहित्य हिंदू-बौद्ध प्रतिमानों से भरा हुआ है। सुमात्रा और बाली, इंडोनेशिया के द्वीप हैं। इस पूरे क्षेत्र में सात शताब्दियों तक (छठी से 13वीं ईसा) श्री विजय साम्राज्य का एकछत्र राज्य रहा। उसका प्रभाव आंध्र के नागपट्टीनम तक था। इंडोनेशिया का तो मूल नाम ही हिंद-एशिया से निकला है। वह आज भले ही मुस्लिम बहुल हो, पर वहां की करेंसी पर आज भी गणेश जी के चित्र अंकित हैं। वहां मुसलमानों के संस्कृत नाम होते हैं। इंडोनेशिया के प्रथम राष्ट्रपति सुकर्ण थे। उनकी बेटी का नाम मेघावती सुकर्णपुत्री था जो ओडिश के महानायक बीजू पटनायक ने रखा था। वहां चौराहों पर कृष्ण-अर्जुन संवाद, घटोत्कच, भीम, अर्जुन की मूर्तियां मिलती हैं। सिंगापुर का तो नाम ही संस्कृत सिंहपुर से लिया गया है।

विश्व का सबसे बड़ा विष्णु मंदिर भारत में नहीं, कंबोडिया में है। अंकोरवाट कंबोडिया में है जिसका मूल नाम कांबोज है। फ्रांसीसी में आज भी कंबोडिया को कांबोज ही लिखा जाता है। अंकोरवाट मंदिर की दीवारों पर रामायण और महाभारत के वृत्त चित्र अंकित हैं। उसी के पास सहस्त्र शिव लिंग नदी है, जिसके तल की शिलाओं पर हजारों शिव लिंग बने हैं और बड़ी शिलाओं पर शेषशायी विष्णु के सुंदर चित्र उत्कीर्ण हैं। वहां 1150 वर्ष पूर्व 'महेंद्र' पर्वत पर बना प्राह विहिए शिखरेश्वर मंदिर है, जिसके गर्भगृह के शिखर पर हाथी के मस्तक पर नृत्यरत शिव की प्रतिमा है। यह थाईलैंड सीमा पर है। दोनों देशों में इस मंदिर पर कब्जा करने के लिए अनेक वर्ष तक संघर्ष हुआ। अंततः विश्व न्यायालय हेग ने कंबोडिया के पक्ष में निर्णय दिया। यूनेस्को ने इसे भी विश्व विरासत घोषित किया है। वहां से आगे जापान में हिंदू और शिंतो धार्मिक परंपराओं और आस्था में अद्भुत साम्य है, जैसे-पुनर्जन्म, पितृ विसर्जन, अग्निपूजा तथा जन्म और मृत्यु के संस्कार। वहां सरस्वती और गणेश के मंदिर हैं। चीन से हिंदू-बौद्ध संबंध दो हजार वर्ष से भी ज्यादा प्राचीन हैं। महाभारत में 'चीन' का उल्लेख है तो चाणक्य के अर्थशास्त्र में रेशम के लिए चीन की प्रशंसा है। वहां बौद्ध मत ले जाने वाले कुमार जीव, मैत्रेय, कश्यप, समंतभद्र जैसे महान संत आज भी पूजित हैं। शिव के रूद्र रूप, नरसिंह, लक्ष्मी, बाल कन्हैया जैसी अद्भुत शिल्प कृतियां चीन के वर्तमान बौद्ध मंदिरों से लेकर संग्रहालयों तक में मैंने देखी है। हिंद-प्रशांत वास्तव में शांत भारत की हिंदू सभ्यता का गौरवशाली क्षेत्र है। यहां शांति, समृद्धि, संस्कृति के विकास का नया अध्याय यदि भारत लिखने को सक्रिय हुआ है तो इसे विश्व मंगल का नया शुभ संकेत ही कहना होगा।

(लेखक राज्यसभा के पूर्व सदस्य एवं स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

परीक्षा

यद्यपि परीक्षा शब्द का प्रयोग आजकल छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित होने वाली परीक्षा तक ही सीमित हो गया है। इस शब्द का आशय पर यानी दूसरा और इच्छा अर्थात कामना से है। इसलिए परीक्षा का अर्थ होता है-दूसरे की कामना या दूसरे की चाह। इस संदर्भ में भी विचारणीय यह है कि जो शिक्षार्थी अपनी जीविका-प्राप्ति के लिए शिक्षा प्राप्त करते हैं, वे तो अपनी शिक्षा पूरी होने पर परीक्षा से छुट्टी पा जाते हैं, किंतु अन्य कोई भी ऐसा स्त्री-पुरुष नहीं है जो अपने पूरे जीवन में परीक्षा से बंधा न रहता हो। बालक जन्म लेता है। उसका जन्म उच्च कुल में होना है अथवा निम्न कुल में। यह बालक की इच्छा पर निर्भर नहीं है। वह गौर वर्ण का होगा या श्याम वर्ण का, इसमें भला उसकी इच्छा कहां चलने वाली है? थोड़ा बड़ा होकर वह किस स्कूल में पढ़ेगा और कौन विषय पढ़ेगा-इसमें क्या बच्चों की इच्छा को महत्व दिया जाता है? यहां पर भी बच्चों के संरक्षकों की इच्छा ही निर्णायक होती है। यही स्थिति व्यक्ति के द्वारा अपनी जीविका का चयन करने के समय भी होती है।

भगवान बुद्ध ने कहा है कि अपने जीवन में व्यक्ति जो नहीं चाहता है उसे वही मिलता है और जो चाहता है वह कभी नहीं मिलता है। यही कारण है कि किसी विद्वान ने कहा है कि मनुष्य की विद्या, उसका कर्म, उसकी आर्थिक संपन्नता, उसकी आयु और उसकी मृत्यु-तिथि का निर्धारण करने वाला कोई और है जो यह सब निर्धारित करता है और इसमें किसी दूसरे की इच्छा किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं होती। आखिर यह पर (दूसरा) कौन है, जिसकी इच्छा का उल्लंघन कोई नहीं कर पाता। तब शास्त्र और आचार्य यह कहते हैं कि यह वही परमात्मा है, जिसकी क्षण भर की इच्छा मात्र से ही अनंत ब्रह्मांडों का सृजन और विलय होता है। हां, इसमें इतना विचारणीय अवश्य होता है कि उसकी इच्छा परम कारुणिक है और उसकी करुणा केवल मनुष्य पर ही नहीं, बल्कि संपूर्ण जीव मात्र पर निरंतर बनी रहती है। परमेश्वर की इच्छा के वश में रहता हुआ भी जीव न तो परवशता का अनुभव करता है और न ही किसी प्रकार की हीनता से ग्रसित होता है। हीनता ग्रंथि से मुक्त होना मानवीय जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है। ऐसा इसलिए, क्योंकि जब आप हीनता बोध से मुक्त होते हैं तब आप के व्यक्तित्व में निहित सद्गुणों का विकास होता है।

गदाधर त्रिपाठी

तथ्य-कथ्य | भारतीयों को अपनी किस संस्था पर कितना भरोसा

स्रोत : प्यू रिसर्च सेंटर

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या देश में बीएस-6 मानक वाले वाहनों से प्रदूषण के स्तर में अपेक्षित कमी आ सकती है?

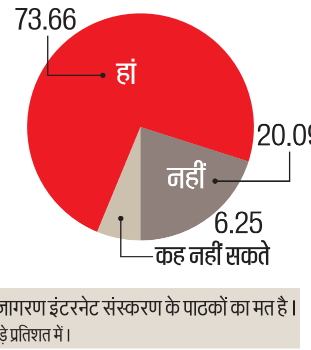

आज का सवाल

क्या राफेल लड़ाकू विमान सौदे पर कांग्रेस पार्टी द्वारा उठाया जा रहा सवाल राजनीति से प्रेरित है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें

Y -हां, **N**-नहीं, **C**-कह नहीं सकते

परिणाम एसएमएस से प्राप्त नतीजों के साथ जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

पाठकनामा

pathaknama@nda.jagran.com

भावनाओं से खिलवाड़ ठीक नहीं

आज जायसी होते तो क्या सोचते शीर्षक से लिखे अपने लेख में कृपाशंकर चौबे ने संजय लीला भंसाली की फिल्म पद्मावती का विरोध कर रहे लोगों को शांत करने की कोशिश की है, लेकिन लेखक ने जिस समय की बात की है उस समय राजा-महाराजाओं का शासन था। उस समय कोई उनका विरोध नहीं कर सकता था। आज दुनिया आधुनिक हो चुकी है। इतिहास के अच्छे-बुरे तथ्यों का विश्लेषण करने लगी है। आज लोकतंत्र है, इसमें हर उस बात का विरोध किया जा सकता है जो किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाती हो। बेशक पद्मावती जायसी की काल्पनिक चरित्र हो, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इस पर फिल्म बना कर किसी समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाया जाया। माना कि फिल्म का विरोध करने वालों का विरोध करने का तरीका गलत है, लेकिन इस फिल्म के निर्माता-निर्देशक को इस फिल्म के विवादित दृश्यों में सुधार का आश्वासन देकर विवाद समाप्त करने की कोशिश करनी चाहिए न कि हठीला रवैया अपनाना चाहिए।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

विश्व पटल पर भारत

अभी हाल ही में फिलीपींस की राजधानी मनीला में आसियान शिखर सम्मेलन, भारत-आसियान शिखर सम्मेलन और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ। यहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस सम्मेलन में पाकिस्तान और चीन को कड़ा संदेश दिया। दोनों ही देशों का नाम लिए बिना आतंकवाद और चरमपंथ को इस क्षेत्र के लिए सबसे बड़ी चुनौती करार दिया। वहीं पूरे दक्षिण चीन सागर पर दावा करने वाले चीन को कड़ा संदेश देते हुए कहा कि भारत हिंद- प्रशांत क्षेत्र में नियम आधारित क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था का पक्षधर है। आसियान देश फिलीपींस, वियतनाम आदि जो कि चीन की दादागिरी से दक्षिण चीन सागर में परेशान है, उनके स्वर से स्वर भारतीय प्रधानमंत्री ने मिलाया। इन सब कदमो से भारत अपनी उपस्थिति विश्व पटल पर मजबूत कर रहा है।

babitakumari983@gmail.com

निर्दोषों पर कार्रवाई

प्रद्युम्न हत्याकांड में अब सीबीआइ ने भी कह दिया है कि अशोक से जबरन जुर्म कबूल करवाया गया। अगर अशोक निर्दोष साबित होता है तो उस पर हुए अत्याचार की भरपाई कौन करेगा? हमारी पुलिस अधिकतर मामलों में ऐसे ही निर्दोष लोगों को पकड़ कर आरोप मढ़ देती है, जिनके पास जमानत की भी व्यवस्था नहीं होती और ये लोग सालों जेलों में सड़ते रहते हैं। क्या कभी हमारी पुलिस जिम्मेवार और संवेदनशील बनेगी ? बड़े आश्चर्य की बात है कि हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने भी दोषी पुलिस अफसरों की जांच और कोई कारवाई करने के बजाय उन्हें पहले ही क्लीन चिट दे दी है।

आत्म प्रकाश सेतिया, फरीदाबाद

योगमय होता विश्व

सऊदी सरकार द्वारा योग को खेल गतिविधि का दर्जा देना स्वागतयोग्य निर्णय है। यूं तो योग एक संपूर्ण जीवन पद्धति है, परंतु कम से कम इसे खेल के रूप में ही स्वीकार करने से अनेक लोगों को इसका लाभ मिल सकेगा। महर्षि पतंजलि प्रणीत अष्टांग योग जीवन के समग्र विकास के अनेक आयाम खोलता है। एक भ्रांति जो जनसाधारण में है वह योग पर किसी विशेष स्वामी या गुरु के अधिकार को लेकर है। वास्तव में योग का प्रचार प्रसार अनेक महात्माओं द्वारा होता रहा है। आज पतंजलि शब्द का उच्चारण करते ही सबका ध्यान एक संस्थान विशेष पर ही जाता है, यह ऋषि पतंजलि के प्रति हमारी अनभिज्ञता को दर्शाता है।

omsanyam@gmail.com

बाजार में नकली दवाइयां

देश में नकली दवाइयों का धंधा फल-फूल रहा है। जिन दवाइयों को जीवन की रक्षा के लिए मरीजों को दिया जाता है अगर वही उसके प्राणों के लिए घातक साबित हो जाए तो इससे बड़ी समस्या और क्या हो सकती है। छोटे कर्मचारी से लेकर बड़े अधिकारियों और नेताओं तक सभी को पता होने के बावजूद ये नकली दवाओं का धंधा दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। लोग इन नकली दवाओं के जहर से मर रहे हैं। अधिकतर मेडिकल स्टोर वाले तो दवाइयों का पक्का बिल तक बना कर नहीं देते और अपनी समझ से मिलते हुए नाम की दवाई भी मरीजों के लिए पकड़ा देते हैं जो मानव अधिकारों का हनन है। इस सबके लिए कौन जिम्मेदार है? स्वास्थ्य से खिलवाड़ का किसी को कोई हक नहीं है इसके लिए सरकार को और अधिक सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। सभी राज्यों के स्वास्थ्य अधिकारियों को निर्देश हो कि वह अपने-अपने क्षेत्र में स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों की अपनी निगरानी में रिपोर्ट तलब करें। साथ ही कोई भी गड़बड़ी मिलने पर तुरन्त कार्रवाई की जाए। किसी भी मेडिकल स्टोर पर प्रतिबंधित कोई दवाई या अन्य सामग्री मिलती है तो तुरंत उसका लाइसेंस रद्द किया जाए। नकली दवाइयां बनाने वाली कंपनी की पहचान व जिस भी कंपनी की दवाइयों के नमूने फेल पाए जाते हैं उन पर सख्त कानूनी कार्यवाही हो और जीवन भर के लिए उनका लाइसेंस रद्द किया जाना चाहिए। लोगों के स्वास्थ्य के प्रति सरकार को पूरी तरह सचेत रहने की आवश्यकता है। बाजार में दवाइयां महंगी भी हैं। कोई गरीब आदमी कितनी मेहनत से कमा कर किसी बीमारी के इलाज के लिए दवाई खरीदता है, ऐसे में अगर उसे नकली दवा मिलेगी तो वह क्या करेगा? सरकार को आम बीमारियों की दवाई की की कीमत कम से कम रखनी चाहिए, जिससे हर आदमी सामान्य बीमारी में तो अपना इलाज करा सके।

आचार्य रामकुमार बघेल शास्त्री, पलवल

ट्वीट-ट्वीट

भंसाली और दीपिका पादुकोण के खिलाफ फतवा देने वाले की गिरफ्तारी क्यों नहीं हुई? खुलेआम सिर काटने पर पांच करोड़ का इनाम दे रहे हैं और आपका कानून सो रहा है...।

मानक गुप्ता@manakgupta

होटलों में खाने पर जीएसटी घटा, पर खाने की कीमतें कम नहीं हुईं। कृपया ध्यान दें अरुण जेटली।

संजय निरुपम@sanjaynirupam

बात, बात पे बात बनाते हैं लोग
बिना बात के भी, बात बनाते हैं लोग
बनाते बात, तो, बात बात में बतलाते हैं लोग
जो हुई ही नहीं, वो बात भी बड़ी खूबसूरती से समझाते हैं लोग
बनाकर बात इतनी, न जाने क्या पाते हैं लोग
कान लगाकर सुन; बना रहे बात, आते जाते लोग

अमिताभ बच्चन@SrBachchan

पीएम मोदी के कड़े आर्थिक फैसलों के बाद भी अगर वह प्यू के मुताबिक देश के सबसे लोकप्रिय नेता हैं और मूडीज 13 साल बाद भारत की क्रेडिट रेटिंग बीएए3 से बीएए2 कर रही है तो इसका मतलब तो यही है कि देश सही रास्ते पर है।

समीर अब्बास@TheSamirAbbas

संघर्ष और सौदे से नहीं, सौहार्द और परस्पर सम्मान से समाज की हर समस्या का समाधान हो सकता है। इस पर हमें अटूट विश्वास रखना चाहिए। श्री श्री रविशंकर@SriSri

जनपथ

पीओके के बाप की वही करें पहचान,
जो खुद पाकिस्तान को मानें अब्बाजान।
मानें अब्बाजान जहां की खाएं थाली,
पानी पीकर रोज उसी को देते गाली।
खा करके कंटाप कहेंगे ओके-ओके,
अपना उसके बाद कहेंगे वो पीओके।

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।